IMPACT FACTOR
6.10

ISSN 2229-4406

UGC Approved International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

# UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

URA

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

**Issue - XXI, Vol. VII**
**Year - XI (Half Yearly)**
**Sept. 2020 To Feb. 2021**

**Editorial Office :**
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

**Contact : 02382 -241913**
9423346913 / 9503814000
9637935252 / 7276301000

**Website**
**www.irasg.com**

**E-mail :**
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

**Publisher :**
**Jyotichandra Publication**
Latur, Dist. Latur - 413531. (MS)

**Price : ₹ 200/-**

CHIEF EDITOR

**Dr. Balaji G. Kamble**
Professor & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur(M.S.)India.

EXECUTIVE EDITORS

**Dr. E. Siva Nagi Reddy**
Director, National Institue
of Hospitality & Tourism Management,
Hyderabad (A.P.)

**Dr. D. Raja Reddy**
Chairman, International Neuro Surjery
Association,
Banjara Hill, Hayderabad (A.P.)

**Dr. Rajendra R. Gavhale**
Head, Dept. of Economics,
G. S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldhana

**Dr. Nilam Chhangani**
Head, Dept. of Economics,
SKNG Mahavidyalaya
Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.)

**Dr. Yu Takamine**
Professor, Fafulty of Law & Letters,
University of Ryukyas,
Okinawa, (Japan).

**Dr. A. H. Jamadar**
Chairman, BOS Hindi,SRTMUN &
Head, Dept. of Hindi, BKD
College,Chakur, Dist. Latur (M.S.)

**Dr. Shaikh Moinoddin G.**
Dept. of Commerce,
Lal Bahadur Shastri College,
Dharmabad, Dist. Nanded(M. S.)

**Scott A. Venezia**
Director, School of Business,
Ensenada Campus,
California, (U.S.A.)

DEPUTY-EDITOR

**Dr. N. G. Mali**
Head, Dept. of Geography,
M. B. College,
Latur,Dist. Latur.(M.S.)

**Dr. Babasaheb M. Gore**
Principal,
Smt. S.D.D.M.College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

CO-EDITORS

**Dr. V.J. Vilegave**
Head, Dept. of P.A.,
Shri. Guru Buddhiswami College,
Purna, Dist. Parbhani (M.S.)

**Dr. Omshiva V. Ligade**
Head, Dept. of History
Shivjagruti College, Nalegaon,
Dist. Latur. (M.S.)

**Dr. S. B. Wadekar**
Dept. of Dairy Science,
Adarsh College,
Hingoli, Dist. Hingoli.(M.S.)

**Dr. Shivanand M. Giri**
Dept. of Marathi,
Bhai Kishanrao Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

# INDEX


| Sr. No | Title for Research Paper | Page No |
|---|---|---|
| 1 | A Study on the context of Chemical Oxygen Demand : An approach<br>**Y. B. Angadi, Suneelkumar Beede** | 1 |
| 2 | Bilateral Trade Relationship between India and Japan<br>**Amar Kolhe** | 5 |
| 3 | Best Practices in Librarianship and Marketing of Library and Information<br>**Narendra Patil** | 12 |
| 4 | Matlab-Matrix Laboratory<br>**J. H. Bhosale** | 17 |
| 5 | Importance of laser in oral and Dental treatments of Children<br>**C. T. Birajdar** | 19 |
| 6 | Conventional Energy Sources and Its Possible Alternatives<br>**S. D. Misal** | 25 |
| 7 | मोहन राकेश के नाटको के नारी - पात्र<br>**डॉ. महावीर रामजी हाके** | 28 |
| 8 | माध्यमिक स्तरावर राबविण्यात येणाऱ्या पर्यावरण शैक्षणिक उपक्रमांचा अभ्यास<br>**डॉ. हेमचंद्र लक्ष्मण ससाने** | 33 |
| 9 | सम्राट कनिष्क कला व साहित्याचा आश्रयदाता<br>**डॉ. शिवाजी ज्ञानोबा मुळे** | 40 |
| 10 | आधुनिक जीवनाचे भाष्य करणारे दोन नवोदीत कवी<br>**मनोहर कदम** | 44 |
| 11 | स्थानिक सवराज्य संस्थेची वाटचाल<br>**डॉ. आशा नरसिंगराव गिते** | 49 |

Issue : XXI, Vol . VII
URA UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS
IMPACT FACTOR 6.10
ISSN 2229-4406
Sept. 2020 To Feb. 2021


7

# मोहन राकेश के नाटको के नारी - पात्र

**डॉ. महावीर रामजी हाके**
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड जि. परभणी

Research Paper - Hindi

नारी जीवन को अभिव्यक्त करनेवाले मोहन राकेश के ये तीनो नाटक कही नारी को त्यागमयी, कही उपभोग्या, कही अहंकारी तो कही विद्रोहिणी गरिमा की मूर्ति चित्रित करते है । इन तीनो नाटकों के पीछे जो असली नारी हैं, वह एक अस्तित्व की तलाश में भटकती नारी है आज भारतीय नारी का जीवन केवल पृष्ठोंपर ही स्वतंत्र है, सामाजिक जीवन में नहीं । वस्तुस्थिति यह है कि आज की नारी अपने चतुर्दिक परिवेश से, अंतर्राष्ट्रीय माहौल से अपने को जोडना चाहती है । वह इनके बीच किसी मध्यमार्ग की खोज अथवा समझोता नही कर पा रही है। यह एक विडंबना पूर्ण स्थिति है । यहाँ नारी यथार्थ परिवेश में टुटती भी है, और फिर खडे होने का प्रयास भी करती है, कभी वह झुँझलाती है, बौखलाती है, कभी ईमानदारी के साथ अपने प्रश्नों और अभवों के साथ जुझती है, और कभी समझौता भी कर लेती है ।

हिंदु समाज की परंपराएँ नारी को किसी दायरे में बाँध कर ही रखना चाहती है । वह यदि एकाकी जीवन जीना भी चाहे तो दुनिया उसे जीने नही देती । पुरुष का साया उसके लिये इतना जरुरी बन गया है, कि उसके बिना रहना उसके लिये असंभव हो गया है । परिणाम स्वरुप नारी विवाह को एक आवश्यक बुराई के रुप में अपना रही है ।

यह कहना कठिन है कि अविवाहित नारी अधिक संत्रास झेलती है । या विवाहित नारी / सत्य तो यह है कि चैन किसी को नही / विवाहित कार्यशील नारी बहुत दूर तक अपने संस्कारो से मुक्त नही हो पाती / घर में रहकर भी बेघर होने की अनुभूति उसे आंतरिक पिडा देती है । नारी जीवन को इन विभिन्न भाव भंगिमाओ से कुछ भंगिमाओ का सोदाहरण विवेचन अपने कथन की पुष्ठि के लिय सहायक होगा ।

**आषाढ के एक दिन की मल्लिका :-**

मानव संबंधों की दृष्टि से आदिकाल से लेकर आज तक की विकास यात्रा के दौरान, मानवीय संबंधों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुये है । इन परिवर्तनों का सर्वाधिकार गंभीर प्रभाव नारी पुरुष के अत्यंत आत्मीय अंतरंग, कोमलतम संबंध अर्थात दांपत्य संबंध पर अधिक पडा है । अपने नाटको में राकेश बुनियादी तोर पर इसी रिस्तेकी गहरी छानबीन करते रहे हैं वे इन संबंधोकीं मूल जमीन की ही तलाश करते रहे है । डॉ.गोविंद चातक के शब्दों में "हिंदी नाटक में मोहन राकेश ने पहली बार अस्तित्त्व संबंधी कुछ मौलिक प्रश्न उठाये । उनको नई भंगिमाएँ दी । उनकी रचनाँए एक विशिष्ट धरातल पर जीवन एक अर्थ खोजती हैं ।"[१]

'आषाढ का एक दिन' में प्रेम का त्रिकोण दिखाई देता है । नारी पुरुष के तीन भिन्न भिन्न रुप देखने को मिलते है । कालिदास मल्लिका (प्रेमी मल्लिका) कालिदास प्रियंगुमंजरी (पती-पत्नी) विलोम मल्लिका (पति-पत्नी) इसमें कालिदास और मल्लिका के संबंध में उलजाव है, जटिलता है, और एक तलाश है संबंधों की मोहन राकेश के 'आषाढ का एक दिन' में एक ऐसी प्रेमिका का चित्रण है, जो एक कवि को प्रेम ही नही करती उसे महान होते हुअे भी देखना चाहती है । इस नाटक में हम कालिदास को मल्लिका के समक्ष तुच्छ और स्वार्थी व्यक्ति के रुप में देखते है । कालिदास को महान बनाने में मल्लिका अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है । प्रस्तुत नाटक में प्रेम भावना का व्यक्ति कर्म एवं कलाकार की भावना से संघर्ष दिखाया गया है । "इन दो दिनों के अंतराल को कालिदास और मल्लिका की पीडा ने भरा है कालिदास में अहं की पीडा है,तो मल्लिका में रचनात्मक उत्सर्ग की"[२]

स्पष्टता: आषाढ का एक दिन में प्रेम का त्रिकोण है, एक नारी दो पुरुष । मल्लिका जानती है कि, विलोम कहाँ सबल है, और कालिदास कहाँ निर्बल । अत: वह सर्वदा चेष्टा करती है कि दोनों का सामना न हो पाये । दोनों का,सामना होने पर व बेचैन हो जाती है । "नियति की बिडंबनावश अंतत: मल्लिका का शरीर विलोम को प्राप्त है, और ख्याती कालिदास की" ।[३] मल्लिका और कालिदास का विवाह न होने कारण कालिदास का अभावग्रस्त जीवन है । परंतु अभाव की पूर्ति उससे भी बडा कारण बन जाती है । वास्तविक यह सत्य है कि कोई भी व्यक्ति जब सुविधा भोगी हो जाता है । तो वह स्थिति को भोगने के लिये बाध्य हो जाता है । यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि अभाव पूर्ण जीवन की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है ।

'आषाढ का एक दिन' में कालिदास और मल्लिका के संबंधमें जो उलझाव है । जो मल्लिका के प्रेम को उदात स्वरुप प्रदान करती है । वह स्वयं अभाव झेलती है । "मैं टूटकर भी अनुभव करती रही कि तुम बने रहो क्योंकि मैं अपने को अपने में न देखकर तुम में देखती रही ।"[४] मल्लिका का यह निश्चय प्रेम उस कालिदास के प्रति है जो आत्मकेंद्रित है । नायिका के रुप में मल्लिका किसी

की प्रेयसी है, तो बाद में दूसरे की पत्नि बन जाती है ।

आधुनिक संदर्भ में भी यह विडंबना है कि आज भी पुरुष विभिन्न नारियों से यौन संबंध स्थापित करने के बाद भी विवाह योग्य रहते है । वही नारी यदि परिस्थितियों की भँवर में यदि फँस जाये तो ऊपर उठाने का आधुनिक पुरुष तैयार नही मल्लिका ऐसी ही आधुनिक नारी का ज्वलंत उदाहरण है । आज हमारे समाज में भी अनेक महिलाएँ मल्लिका की भाँति दोहरा जीवन व्यतीत कर रही है । मल्लिका ऐसे विसंगत संबंधो से उभरी है । जो एक अव्यक्त पीडा को सहन करने के लिये बाध्य है ।

*** लहरों के राजहंस : व्यक्ति स्वातंत्र की हिमायती सुंदरी -**

'लहरों के राजहंस' मोहन राकेश का दूसरा नाटक है । अन्य मानवीय संबंधो के साथ स्त्री-पुरुष संबंधो में तीन भिन्न रुप भी देखने को मिलते है, अलका श्यामांग, सुंदरी नंद और यशोधरा-गौतम । इसमें से नंद और सुंदरी के संबंधो की उलझन और जटिलता विशेष उल्लेखनीय है । नंद और सुंदरी एक प्रकार से अलका श्यामांग और यशोधरा गौतम बुध्द के बीच की स्थिति में है ।

'लहरों के राजहंस' की सुंदरी नाटक की नायिका है । जिसमे फ्रायड का इड और इगो वर्तमान है । नाटक में वह सर्वप्रथम गर्व भरी हुई नारी की भाँति कामोत्सव के संबंध में अलका से कहते हुअे आती है, कि "हाँ रात के अंतिम प्रहर तक । भोज अपानक और नृत्य वर्षो तक याद बनी रहनी चाहिये, लोंगोकें मन में"[५] सुंदरी अपने रुप और यक्षिणी नारी होने पर गर्व करती है । शारीरिक सुख भोग विलास के अलावा अन्य अभौतिक तत्त्वों को तुच्छ समझती है ।

रुप गर्विता सुंदरी को सहज और अटूट विश्वास है कि उसका पति नंद उसके रुपपाश और प्रेम बंधन से मुक्त होकर कभी भिक्षु नही बन सकता । सुंदरी व्यक्ति विशेष न होकर जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण का प्रतिनिधीत्व करती है । उसे अपने रुपाकर्षण पर इतना गर्व है कि वह पुरुष को प्रवृत्ति मार्ग पर लाने के लिये नारी का अमोघ अस्त्र मानती है । अलका से दृढता से कहती है, "नारी का आकर्षण पुरुष को पुरुष बनाता है, तो उसका अपकर्षण उसे गौतम बुध्द बना देता है"[६]

सुंदरी पुरुष के लिये एक मात्र प्रवृत्ति मार्ग तथा उसे नारी सौंदर्य के दीपक पर जलने वाला पतंगा मात्र मानती है । इसका प्रमाण यह है कि वह अपने अहंकार और दर्प में गौतम बुध्द की महानता भी स्वीकार नही कर पाती, और प्रवृत्ति एवं भोगवाद के समक्ष उनकी निवृत्तिवाद का उपहास करती हुई कहती है । "कोई गौतम बुध्द से कहे कि कमलताल के पास आकर इनसे (राजहंसो से) भी वे निर्वाण और अमरत्व की बात कहें । ये चोंच से चोंच मिलाकर चकित दृष्टिसे उनकी और देखेंगे फिर काँपती लहरे जिधर से आयेगी, उधर तिर जायेंगे । सोचती हूँ उस दिन एक बार गौतम बुध्द का मन नही पर जाकर उपदेश देने का नही होगा ।"[७]

एक मनोविश्लेषक की भाँति सुंदरी यह समझती है की सिध्दार्थ के मन में दमित काम ने

उदातीकृत होकर उन्हे तथागत बना दिया है । देवी यशोधरा का आकर्षण यदि राजकुमार सिध्दार्थ को बाँध सकता, तो क्या आज भी राजकुमार सिध्दार्थ न होते । सुंदरी में अदम्य उत्साह और गर्व है, उसकी यह उक्ति है कि यह कैसे संभव है आज तक कभी हुआ है ? कपीलवस्तू के किसी राजपुरुष ने इस भवन में निमंत्रण पाकर कृतार्थ न समझा हो"[८] सुंदरी राजमहिषी हैं, उसमें दर्प और आत्मसम्मान का भाव कूट-कूट कर भरा है, जो नारी भाव के अनुरुप है ।

दूसरे अंक में नंद सुंदरी के श्रृंगार में सहायता करता है । इसी समय भिक्षुओंकी आवाज से नंद के हाथों में कंपन होता है । और दर्पण गिरकर टूट जाता है । सुंदरी अपने जीवन में दुहरे मानदंडों को मान्यता देना चाहती है । वह स्वयं तो राजकुमार सिध्दार्थ और देवी यशोधरा के अतरंग जीवन को लेकर चर्चा करने का अधिकार रखती है, परंतु दूसरों को अपने अंतरंग जीवन विषयक चर्चा का अधिकार नही देना चाहती ।

शुरु से अंत तक सुंदरी के चरित्र से यह दृष्टव्य है कि सुंदरी में अहंकार भावना प्रबल है । परंतु नंद जब सिरसे बाल कटवा कर आता है, तो वह कहती है । लौट कर वे नही आयें, कोई दूसरा आया है । सुंदरी पूर्वाग्रह के कारण नंद को समक्ष नही पाती, उसकी बाते अनसुनी कर देती है । उसका अहं उसे निरंतर नंद से दूर करने में प्रेरक बन कर सामने खडा रहता है । सुंदरी जिस पूर्ण पुरुष की तलाश में थी । उसे प्राप्त करने में असमर्थ रहती है । इसी अंतद्वद्व में पडी सुंदरी कह देती है कि, "तुम कितने बिंदु खोजे हैं आज तक तुमने ? जाओ ? एक और बिन्दू खोजो कितने कितने शब्दों में हाँ ढाफ है बिदूओंको जाओ और कुछ शब्द ढूँढो परंतु अंत में कहाँ रह जाते है सब बिंदु कहाँ चले जाते है, तुम्हारे शब्द ?[९]" अपने सौंदर्य पर गर्व करने वाली सुंदरी अंततक अंतर्दवंदव करती हुई पराजित होती है । अपने अभिमान के खंडित होणे पर सुंदरी एकांत चाहती है ।

इस प्रकार संपूर्ण नाटक में सुंदरी का चरित्र अहं केंद्रित है, और नंद दुविधाग्रस्त । जो शुरु से अंत तक और ना के बीच हिलोरे खाता रहता है । अहंकारी व्यक्ति का प्रेम आत्मकेंद्रित होकर अंतत: अहंकार का ही अंग बन जाता है, जैसा कि डॉ.नगेंद्र ने कहा है "अहंकार का गुण है, घनत्व, और राग का गुण है, तरलता, धनत्व का निर्बंध विकास जडता की ओर ले जाता है । वह मनुष्य को पत्थर बना सकता है ।[१०]"

अत: इस नाटक के नंद और सुंदर के व्यक्तित्व की बेचैनी विवशता: आंतरिक संघर्ष और यातना के माध्यम से आज के नारी पुरुष को नियति को रेखांकित किया गया है ।

## संदर्भ संकेत :-

१) आधुनिक नाटक का मसीहा मोहन राकेश - डॉ.गोविंद चातक पृ.सं. -१४४
२) हिंदी साहित्य का इतिहास सं. डॉ.नगेंद्र, डॉ.रामदरश मिश्र पृ.सं.-६६९
३) हिंदी नाटक बदलते आयाम - नरेंद्रनाथ त्रिपाठी पृ.सं. - ९१
४) आषाढ का एक दिन - मोहन राकेश पृ.सं. १०९
५) लहरों के राजहंस - मोहन राकेश पृ.सं. १०९
६) वही पृ.सं. - ५५
७) वही पृ. सं. - ५६
८) वही पृ.सं. - ६५- ६६
९) वही पृ.सं. - १२२
१०) मोहन राकेश के नाटक - द्विजराम यादव पृ.सं. १०२